प्रातः क्लास 9-7-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। बच्चे जानते हैं हम बेहद के बाप के सामने बैठे हैं। हम ईश्वरीय परिवार के हैं। ईश्वर है निराकार यह भी तुम जानते हो। तुम आत्म-अभिमानी हो बैठते हो। अभी इसमें कोई सांयस घमण्डी, हठयोग आद करने की बात ही नहीं। यह है बुधि का काम। इसमें शरीर का कुछ भी काम नहीं। हठयोग में शरीर का काम रहता है। यहां बच्चे अपन को आत्मा समझ और बाप के सामने बैठे हैं। यह भी जानते हो बाबा हमको पढ़ा रहे हैं। एक तो कहते हैं अपन को आत्मा समझो। बाप को याद करो तो हे मीठे2 बच्चों तुम्हारे सभी पाप कट जावेंगे। और चक्र को फिराओ। औरों की सर्विस कर आप समान बनाओ। बाप एक एक को बैठ देखते हैं। यह क्या सर्विस कर रहे हैं। स्थूल सेवा करते हैं या सूक्ष्म सेवा करते है या मूल सेवा करते हैं। एक एक को बाप देखते हैं। यह सभी को बाप का परिचय देते हैं। मूल बात है यह। हरेक बच्चा बाप का परिचय देते हैं। औरों को कुछ समझाते हैं कि बाप बहुत कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पापकट जावेंगे। यह सर्विस करते हैं या नहीं। कहां तक इस सर्विस में रहते हैं। अपन को भेंट करते है सर्विसएबुल बच्चों से? सब से जास्ती सर्विस कौन करते हैं। क्यों नहीं मैं इन से जास्ती सर्विस करूं। इन से भी जास्ती याद की यात्रा में दौड़ी पहनुं। दौड़ी पहन सकता हूं या नहीं। हरेक को बाबा देखते हैं। बाबा हरेक से समाचार पूछते हैं क्या सेवा करते हो। कोई को बाप का परिचय दे उनका कल्याण करते हो। टाईम वेस्ट तो नहीं करते हो। मूल बात है ही यही। बाप का परिचय देना। क्योंकि इस समय सभी आरफन हैं। बेहद के बाप को कोई भी नहीं जानते। बाप से वरसा तो जरूर मिलता है। स्वर्ग भी था जरूर। शान्तिधाम भी था। जिसको ही मुक्ति कहा जाता है। अभी तुम बच्चों को मुक्तिधाम और जीवनमुक्तिधाम दोनो ही बुधि में है। जो सर्विसएबुल बच्चे हैं। बच्चों को यह भी समझना है हम अभी पढ़ रहे हैं। फिर स्वर्ग में एकदम जीवन मुक्ति का राज-भाग लेंगे। बाकी जो भी ढेर आत्मायें हैं दूसरे धर्म वाले वह तो कोई भी नहीं रहेंगे। सिर्फ एक ही रहेंगे। यह भी सिर्फ तुम बच्चों की बुधि में है। सिर्फ हम ही भारत में रहेंगे। 5000 वर्ष पहले भी हम ही थे। बाप बच्चों को बैठ सिखलाते हैं ना। बुधि में क्या याद रहना चाहिए। यहां तुम संगम युग पर बैठे हो। तो खान-पान भी शुध, पवित्रता भी जरूर चाहिए। जानते हो हम भविष्य में सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण सम्पूर्ण निर्विकारी बनते हैं। यह महिमा शरीरधारी देवताओं की है। आत्माओं की तो महिमा नहीं है। वहां तो सिर्फ आत्मायें निवास करती हैं। हरेक का अपना2 पार्ट है। जो यहां आकर बजाते रहते हैं। तुम्हारी बुधि में एक आबजेक्ट तो है। हमको इन जैसा बनना है। बाप का फरमान है हे बच्चों पवित्र बनो। पूछेंगे कैसे पवित्र रहें। क्योंकि माया के तूफान बहुत आते हैं। बुधि कहां2 चली जाती है। उनको कैसे छोड़ें। बच्चों की बुधि चलती है ना। और कोई की भी बुधि नहीं चलती है। बाप, टीचर, गुरु भी तुमको मिला है। यह भी तुम जानते हो ऊंच ते ऊंच है भगवान। वह बाप भी है, टीचर भी है। ज्ञान का सागर भी है। बाप आये हैं, हम सभी आत्माओं को साथ ले जावेंगे। सतयुग में तो बहुत ही थोड़े रहते हैं। सिर्फ भारत में थोड़ी जीवात्मायें रहती हैं। वह हैं देवी देवतायें। यह बातें सिवाय तुम्हारे और कोई की भी बुधि में नहीं होगा। तुम्हारी बुधि में है अभी हम थोड़े ही समय में, 8 वर्ष में, सिर्फ हम ही थोड़े बाकी रहेंगे। और इतने सभी धर्म, खण्ड आद नहीं रहेंगे। हम ही विश्व के मालिक होंगे। बाबा आया है आदी-सनातन-देवी-देवता धर्म की स्थापना करने। हम ही सारे विश्व पर रहेंगे। हमारा ही एक राज्य होगा। बहुत ही सुख का राज्य होगा। यह भी जानते हो उस समय किस2 पद वाले होंगे। हमारा क्या पद होगा। हम कितनी रूहानी सेवा करते हैं। बाप भी पूछते हैं। ऐसे नहीं कि बाबा अन्तर्यामी है। बच्चे हरेक खुद समझ सकते हैं हम क्या कर रहे हैं। कौन सी सेवा कर रहे हैं। जरूर समझते होंगे पहले न0 में सेवा तो यह दादा ही करते हैं श्रीमत पर। यह तो बहुत सेवा कर रहे हैं। घड़ी2 समझाते रहते हैं मीठे2 बच्चों अपन को आत्मा समझो। देह-अभिमान छोड़ो। अपन को आत्मा कितना समय समझते हो। यह पक्का

करना है हम आत्मा हैं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। इससे ही बेड़ा पार होना है। याद करते2 पुरानी दुनिया से नई दुनिया में चले जावेंगे। अभी बाकी थोड़ा समय है। फिर हम अपने सुखधाम चले जावेंगे। जो अच्छी रीत सेवा करते हैं, क्योंकि मुख्य है रूहानी सेवा। सभी को परिचय देना। यह है सब से सहज बात। स्थूल सर्विस करने में, भोजन आदि बनाने में, भोजन खाने में भी मेहनत लगती है। इसमें तो मेहनत की कोई बात ही नहीं। सिर्फ अपने को आत्मा समझना है। आत्मा अविनाशी, शरीर विनाशी है। आत्मा ही सारा पार्ट बजाती है। एक शिक्षा बाप एक ही बार आकर देते हैं। जब विनाश का समय होता है। नई दुनिया है ही देवी-देवताओं की। उस में जरूर जाना है। बाकी सारी दुनिया को शान्तिधाम जाना है। यह पुरानी दुनिया रहेगी नहीं। तुम नई दुनिया में होंगे तो पुरानी दुनिया की याद होगी? कुछ भी नहीं। तुम स्वर्ग में ही होंगे। राज्य करते होंगे। यह बुद्धि में रहने से भी खुशी होती है। नई दुनिया को स्वर्ग भी कहा जाता है। अनेक नाम दिये जाते हैं। नर्क को भी अनेक नाम दिये जाते हैं। पापात्माओं की दुनिया, हेल, दुःखधाम। अभी तुम बच्चे जानते हो बेहद का बाप एक ही है, हम उनके सिकीलधे बच्चे हैं। तो ऐसे बाप से लव भी बहुत होना चाहिए। बाप का भी बहुत लव है बच्चों में। जो बहुत सेवा करते हैं, कांटों को फूल बना देते हैं। हमको बनाने आये हैं। बाप खुद नहीं बनते। मनुष्य से देवता बनना है ना। तो अन्दर में बहुत खुशी होनी चाहिए स्वर्ग में हम कौन सा पद पावेंगे। हम क्या सेवा करते हैं। घर में नौकर-चाकर है उनको भी पहचान देनी चाहिए। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। जो जो कनेक्शन में आते हैं उनको शिक्षा देनी चाहिए। सभी की सेवा करनी है ना। अबलाओं, गरीबों की, भीलनियों की, गरीब तो बहुत हैं ना। वह सुधर जावेंगे। कोई भी पाप आदि न करेंगे। नहीं तो पाप-कर्म करते रहेंगे। देखते हो चोराकारी भी कितनी होती है। नौकर लोग भी चोरी कर लेते हैं। नहीं तो घर में बच्चे हैं ताला क्यों लगावें। परन्तु आजकल बच्चे भी चोर बन पड़ते हैं। कुछ न कुछ छिपाकर उठा लेते हैं। किसको भूख सताती है तो हजम कर खा लेते हैं। लोभ वाला जरूर कुछ चोरी कर खाता होगा। यह तो शिव बाबा का भण्डारा है। इससे तो पाई की भी चोरी नहीं करनी चाहिए। यह ब्रह्मा तो ट्रस्टी है। बेहद का बाप भगवान तुम्हारे पास आया है। भगवान के घर में कब कोई चोरी करता होगा। स्वप्न में भी नहीं होगा। तुम जानते हो ऊंच ते ऊंच है शिव भगवान, उनके हम बच्चे हैं। तो हमको दैवी-कर्म करनी चाहिए। तुम चोरी करने वाले को भी जेल में जाकर ज्ञान देते हो। यहां क्या चोरी करेंगे। कब आम उठाया, कोई चीज़ उठाकर खा ली। यह भी चोरी है ना। यज्ञ है ना। कोई भी चीज़ बिगर पूछे उठानी न चाहिए। हाथ भी न लगाना चाहिए। शिव बाबा हमारा बाप है, वह सुनते हैं, देखते हैं, पूछते हैं बच्चे कोई अवगुण तो नहीं है। अगर कोई अवगुण हो तो सुना दो। दान में दे दो। दान में देकर फिर कोई अवज्ञा करेंगे तो फिर बहुत सजायें खावेंगे। चोरी की आदत होती है। समझो कोई साईकिल उठाते हैं तो पकड़ा जाता है। कोई दुकान में गया बिस्केट का डब्बा उठा लिया, या कोई छोटी2 चीज़ ऐसे ही छिपाकर ले लेते हैं। दुकान वाले बड़ी सम्भाल रखते हैं। यह तो बहुत बड़ी गवर्मेन्ट है। बड़ी ते बड़ी पाण्डव गवर्मेन्ट है। अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। बाप कहते हैं मैं तो राज्य नहीं करता। तुम पाण्डव ही राज्य करते हो। उन्हों ने पाण्डवपति कृष्ण को कह दिया है। पाण्डवपति वा पिता कौन है कौन है, तुम जानते हो। सामने बैठे हैं। हरेक अन्दर में समझ सकते हैं हम बाबा की क्या सेवा करते हैं। बाबा हमको विश्व का बादशाही दे खुद वानप्रस्त में चले जाते हैं। कितनी निष्काम सेवा करते हैं। बाप जैसे निष्काम सेवा कोई कर न सके। कितनी ऊंच ते ऊंच सेवा करते हैं। सभी सुखी और शान्त हो जाते हैं। वह तो सिर्फ कहते रहते हैं विश्व में शान्ति हो। शान्ति की प्राईज देने अखबारों में डालते हैं। यहां तो तुम बच्चे जानते हो तुमको तो बहुत भारी प्राईज मिलती है। जो अच्छी सर्विस करते हैं। ऊंच ते ऊंच सेवा है बाप का परिचय देना। यह तो कोई भी कर सकते हैं। बच्चों को यह बनना है। तो सेवा भी करनी चाहिए ना। इनका देखा यह

भी लौकिक परिवार था ना। इन से बाबा ने कराया। इसमें प्रवेश कर इनको भी कराते हैं। कहेंगे तुमको ही कि यह करो। हमको कैसे कहेंगे। हमारे में प्रवेश होकर करते हैं। करन-करावनहार है ना। बैठे2 कहा चलो। यह छोड़ो। यह तो छी छी दुनिया है। चलो बैकुण्ठ। अभी स्वर्ग का मालिक बनना है। बस वैराग्य आ गया। सभी समझते थे इनको क्या होता है। इतना जबरदस्त फायदे वाला व्यापार, यह क्या करते हैं। पता थोड़े ही था कि यह क्या जाकर करेंगे। छोड़ना कोई बड़ी बात थोड़े ही है। बस त्याग। सो भी बाप यहां ही बैठ बच्चों की सेवा करते थे। सभी को त्याग कराया। बच्ची को भी त्याग कराया। अभी यह रूहानी सेवा करनी है। सभी को पवित्र बनाना है। सभी कहते थे यह ज्ञानामृत पीने जाते हैं। नाम माता का लेते थे। ओमराधे पास ज्ञानामृत पीने जाते हैं। किसने यह युक्ति रची। शिव बाबा ने इनमें प्रवेश हो कितनी अच्छी युक्ति रची। जो कोई आवेगा ज्ञानामृत पीयेगा। यह भी गायन है अमृत छोड़ विष काहे को खावे। विष छोड़, ज्ञान अमृत पी पावनदेवता बनना है। पावनकब विष नहीं खावेंगे। शुरू में यह बात थी। कोई भी आवेंगे उनको कहेंगे पावन बनो। अमृत पीना है तो विष छोड़ देना है। पावन बैकुण्ठ का मालिक बनना है। एक को ही याद करना है। ज्ञान-अमृत पीना है तो विष नहीं पीना है। तो जरूर झगड़ा चलेगा ना। शुरू की खिट-पिट अभी तक चली आती है। अबलाओं पर कितनी मार-पीट होती है। यह तो चलती रहेगी। क्योंकि काम बड़ा शत्रु है। कामेषु क्रोधेषु है ना। काम की चेष्टा पूरी न हुई तो मारेंगे। जितनातुम बहुत होते जावेंगे फिर समझेंगे पवित्रता तो अच्छी है। इसके लिए ही हम पुकारते हैं आकर बाबा हमकोपावन बनाओ। तुम्हारी भी पहले कैसे थी। क्या2 करते थे। अभी तुम क्या बन रहे हो। आगे तो देवताओं के आगे जाकरकहते थे हम पापी हैं ऐसे हैं। अभी ऐसे नहीं कहेंगे। क्योंकि अभी तुम जानते हो हम यह बनते हैं। अपने से पूछना चाहिए कहां तक हम सेवा करते हैं। जैसे भण्डारी है। तुम्हारी लिए कितनी सेवा करती है। कितना उनकापुण्य बनता है। बहुतों की सेवा करती है। तो सभी के आशीर्वाद उस पर आती है। बहुत महिमा लिखते हैं, भण्डारी की तो कमाल है। कितना प्रबन्ध रखती है। यह तो हुई स्थूल सर्विस। सूक्ष्म भी करना चाहे तो कर सकते हैं। सिर्फ शिव बाबा को याद कर भोजन बनावे। एक शिव बाबा के सिवाय और कोई है नहीं। वही सहायता करते हैं। गायन भी है ना शरण परी प्रभु मैं तुम तेरी। सतयुग में थोड़े ही ऐसे कहेंगे। अभी तुम शरण में आये हो। बाप समझाते हैं आधा कल्प तुम रावण से पीड़ित हुये हो अभी बाप छुड़ाते हैं। तो बाप के शरण आये हो। कहते हो बाबा यह 5भूत बड़े ही तीखे हैं। कोई को भूत लगता है ना। अशुध सोल आती है। तुम्हारे को कितनी भूत लगी हुई है। काम क्रोध ... यहभूत तुमको बहुत पीड़ित करते हैं। वह अशुध सोल तो कोई को तंग करती है। तुमको पता है यह5भूत तो 2500वर्ष से चले आये हैं। तुम कितने तंग हो पड़े हो। इन 5भूतों ने कंगाल, व्यर्थ नाट अपोनी बना दिया है। देहअभिमान भी भूत है। नम्बरवन। काम भी बड़ा भूत है। उन्हों ने तुमको कितना सताया है। यह भी बाप ने बतलाया है कल्प2 तुमको यह भूत लगती है। यथा राजा-रानी तथा प्रजा। सभी को भूत लगा हुआ है। तो यह भूत की दुनिया कहेंगे ना। यह भी तुम समझते हो। और कोई समझ न सके। रावण राज्य माना आसुरी राज्य। सतयुग त्रेता में भूत नहीं होते हैं। एक भूत भी कितना दुःखी कर देते हैं। इनका किसको पता नहीं है। 5विकारों रूपीरावण का भूत है। जिससे बाप आकर छुड़ाते हैं। तुम्हारे में भी कोई2 सेन्सीबुल है। जिनकी बुद्धि में बैठता है। इस जन्म में तो ऐसा कोई काम न करना है। चोरी को, देहअभिमान आया। नतीजा क्या होगा पद भ्रष्ट हो जावेंगे। ऐसे2 भी यज्ञ में रहते हैं कुछ न कुछ उठाये लेते। कहते भी हैं कब का चोर सौ लख का चोर। यज्ञ में तो ऐसा काम कब नहीं करना चाहिए। आदत पड़ती है फिर तो कब छूटती नहीं। कितना माथा मारते हैं। विकार के लिए भी कितना तंग करते हैं। उनका नाम ही है सुपनखा, पुतना। दुशासन। अकासुर-बकासुर। यह सभी आसुरी नाम हैं। बच्चे जानते हैं हम भी आसुरी सम्प्र0 थे। अभी ईश्वरीय सम्प्र0 बने हैं। बाप हमकोकितनी अच्छी

मत देते हैं। धीरे2 बच्चेपुरे याद करो तो किचड़ा निकल जावेंगे। मैं लेहर का सोनार हूं। तुमको बहुत अच्छी युक्ति बताता हूं। जंक जो तुम्हारे ऊपर चढ़ी हुई है वह कैसे उतरे। पक्के सोने पर 5विकारों रूपी जंक चढ़ी हुई है। सोनार जब जेवरबनाते हैं तो उसमें थोड़ाशुध चान्दी डालते हैं फिर तांबा लोहा, इन सभी का अन्दाज होता है। 24कैरेट प्युर सोना को कहा जाता है। सच्चा सोना कब काला नहीं होता। 9कैरेट होगा तो काला हो जावेगा। तुम भी काले तमोप्रधान हो गये हो। कुछ डाला तो नहीं है। नीचे गिरते ही आये हो। बाप समझाते हैं तुम्हारे में यह जंक पड़ी है। इसलिए आत्मा तमोप्रधान बनी है। फिर सतोप्रधान बनना है तो बाप को याद करते रहो। जितना याद करेंगे उतना ही सतोप्रधान बनते जावेंगे। मनुष्य से देवता बनना है ना। त्रेता को भी स्वर्ग नहीं कहेंगे। सेमी स्वर्ग। दो कला कम हो जाती है। रामराज्य में। वह सूर्यवंशी वह चन्द्रवंशी। मनुष्य मात्र राम2 करते माला जपते रहते। परन्तु फायदा कुछ भी नहीं। राम कोई पतित-पावन थोड़े ही हैं। हां शिव बाबा पतित-पावन है। उनको ही याद करना है। शिव बाबा है ही सभी आत्माओं का बाप। तुमको बाप ने कितनी सजा दी है। पढ़ाते हैं, समझाते हैं कोई भी छीछी काम न करना है। तुम फूल बनते हो ना कांटे से। जानते हो बाबा आया हुआ है फूल बनाने। गार्डेन ऑफ फ्लावर्स। तुम बच्चे जानते हो हम फूल बन रहे हैं। तुम बच्चे यहां बैठे हो, हरेक समझ सकते हैं हम क्या सेवा करते हैं। हमारे में कौन सा अवगुण है। बगीचे में जाकर देखो। वहां अक सहित सभी फूलों की वैराईटी है। फर्क देखो कितना है फूलों में। यहां है दुःखों की वैराईटी। वहां है सुख की वैराईटी। पद में फर्क तो होता है ना। बाप कहते हैं बच्चे पुरुषार्थ करो नर से नारायण बनने का। अवगुण निकालते जाओ। हर बात में राय लेते रहो। वाला हमको चोरी करनी पड़ती है। यह करना पड़ता है। खाना पड़ता है। अच्छा हर्जा नहीं। शिव बाबा को याद करते रहो। जितना याद करेंगे तो कट उतरेगी। बाकी विकार में तो कब नहीं जाना। पावन जरूर बनना है। विकार से तो तोबा भरनी चाहिए। तुमने पुकारा ही है बाबा हमको पतित से पावन बनाओ। तो अभी पावन बनने लिए याद करो ना। याद न करने से फिर खराब काम होती है। उनके लिए तोबा भरो। कोई भी बुरा काम न करो। कहा काचोर सो लखा का चोर। पाई की चीज उठाई, चोर तो हुआ ना। सभी को समझाते रहना है। बाप का परिचय देना है। बाप को याद करो तो पाप कट जावेंगे। नहीं तो सेणा दन्ड पड़ जावेगा। आदत पड़ती है तो वह बताना चाहिए। बताने बिगर कब छूट न सके। करते रहते हैं। सुनाते नहीं तो वह बुद्धि को पा लेती है। विकार में रोज जाते हैं, बतलाते नहीं। दिन-रात विकार में जाते रहते हैं। उनकी क्या गति होगी। बाप तो समझाते हैं तुमको विकार के लिए तंग करते हैं, वोही भगवान कहते हैं काम महाशत्रु है। तुम काम पर जीत पहनो तो जगतजीत बनेंगे। अभी की बात है। हम विश्व की बादशाही लेंगे। विकार में कभी नहीं जावेंगे। अबलाओं पर अत्याचार भी द्वापर में नूंध है। कोई नई बात नहीं। गीता का ही ज्ञान है। हर 5000वर्ष बाद सुनाते हैं। भगवान कब आया, वह कौन है यह भी किसको पता नहीं। यह भी बाप ने समझाया है विनाश कैसे होगा। मनुष्यों की सेना की, एरोप्लेन आदि की कोई की दरकार नहीं। ऐसी चीज बनाई है तो जहां बैठे होंगे वहां ही ढेर हो जावेंगे। मौत सिर पर खड़ा है। बाप समझाते हैं अभी घर को याद करो तो पाप कटे। एक ही मूल बात है। इसमें सभी आ जाते हैं। याद से ही तुम 24 कैरेट प्युर बनेंगे। फिर स्वर्ग में आ जावेंगे। भक्ति मार्ग में भी तुम गाते आये हो बाबा आप आवेंगे तो हम आप के ही होकर रहेंगे। आप से ही वरसा लेंगे। तो ऐसा करना चाहिए ना। अपनी जांच रखो हम बाबा को मदद करते हैं। जास्ती कहने की भी दरकार नहीं। हम एक बार समझाते हैं दूसरा बार समझावेंगे फिर तीसरा बार किया तो थप्पर . . . बाप भी कहते हैं खबरदार रहना। अपनी जांच रखनी है। इस अनुसार हमको कितनी प्राईज मिलेगी। है तो बहुत सहज। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। इसको अजपा-जाप कहा जाता। अन्दर में जप नहीं। हम सभी का वह बाप है। हम पढ़ रहे हैं आवाज की बात नहीं। अन्दर में समझने की बात है। अच्छा बच्चों को बुड्मार्निंग और नमस्ते।